



## बंजर भूमि विकास

- बंजर भूमि वह भूमि है जो वर्तमान में अप्रयुक्त पड़ी है या जिसे कुछ बाधाओं के कारण इसकी इष्टतम क्षमता के लिए उपयोग नहीं किया जा रहा है
- कुल बंजर भूमि कुल भौगोलिक क्षेत्र का 14.75% (467021.16 वर्ग किमी) है।

राष्ट्रीय बंजर भूमि विकास बोर्ड बंजर भूमि को दो श्रेणियों में वर्गीकृत करता है:

- कृषि योग्य बंजर भूमि
- अकृषण बंजर भूमि

कृषि योग्य बंजर भूमि में वर्गीकृत किया गया है

- गुलीद और/या हिंसक भूमि
- जन्म। झाड़ियों के बिना लहरदार भूमि
- सतह जल भराव भूमि और मार्श
- नमक प्रभावित भूमि
- शिप्टिंग खेती का क्षेत्र
- अवक्रमित वनभूमि
- अवक्रमित चारागाह/चरागाह भूमि
- अवक्रमित वन वृक्षारोपण
- स्ट्रिप भूमि
- रेत के टीले
- खनन/औद्योगिक बंजर भूमि

अकृषण बंजर भूमि जिनका उपयोग वनस्पति के लिए नहीं किया जा सकता है, उन्हें वर्गीकृत किया जाता है

- क) ब्राउन रॉकी/पथरीले/चट्टानों का बंद
- ख) खड़ी मैला क्षेत्रों
- ग) बर्फ कवर और/या ग्लेशियर भूमि

श्रेणीवार भारत की बंजर भूमि

| कोटि                                      | क्षेत्रफल (वर्ग किमी) | टीजीए% |
|---|-----------------------|--------|
| गुलीद और/या हिंसक भूमि माध्यम             | 6145.96               | 0.19   |
| गुली और/या हिंसक भूमि-गहरी/बहुत गहरी खड्ड | 1266.06               | 0.04   |



|   |           |       |
|---|-----------|-------|
| घने स्क्रब के साथ भूमि                                  | 86979.91  | 2.75  |
| खुले स्क्रब के साथ भूमि                                 | 93033.00  | 2.94  |
| जलभराव और दलदली भूमि-स्थायी                             | 1757.07   | 0.06  |
| जलभराव और दलदली भूमि-मौसमी                              | 6946.31   | 0.22  |
| लवणता/क्षारीयता-मध्यम से प्रभावित भूमि                  | 5414.53   | 0.17  |
| लवणता/क्षारीयता-मजबूत से प्रभावित भूमि                  | 1391.09   | 0.04  |
| शिफ्टिंग खेती क्षेत्र-वर्तमान झूम                       | 4814.68   | 0.15  |
| शिफ्टिंग खेती क्षेत्र-परित्यक्त झूम                     | 4210.46   | 0.13  |
| कम उपयोग/अवक्रमित वन-स्क्रब प्रभुत्व                    | 83699.71  | 2.64  |
| अधिसूचित वन भूमि के अंदर कृषि भूमि                      | 15680.26  | 0.50  |
| अवक्रमित चरागाह/चरागाह भूमि                             | 6832.17   | 0.22  |
| पौधरोपण फसल के तहत अवक्रमित भूमि                        | 278.53    | 0.01  |
| रेत- नदी  | 2111.96   | 0.07  |
| रेत- तटीय रेत   | 654.47    | 0.02  |
| रेत- डेजर्ट सैंड  | 3934.80   | 0.12  |
| रेत-अर्द्ध स्थिर करने के लिए स्थिर (>40m) टिब्बा        | 9279.75   | 0.29  |
| रेत-अर्द्ध स्थिर करने के लिए मध्यम उच्च (15-40m) टिब्बा | 14273.03  | 0.45  |
| खनन बंजर भूमि   | 593.65    | 0.02  |
| औद्योगिक बंजर भूमि                                      | 58.00     | 0.00  |
| बंजर चट्टानी क्षेत्र                                    | 59482.29  | 1.88  |
| बर्फ से ढका और हिमनदों का क्षेत्र                       | 58183.44  | 1.84  |
| कुल बंजर भूमि क्षेत्र                                   | 467021.16 | 14.75 |

### बंजर भूमि गठन के कारण

1. वनों की कटाई
2. अधिक खेती
3. ओवर चराने
4. अकुशल सिंचाई
5. कचरे की डंपिंग, खान कचरे जैसे अनुचित विकासात्मक गतिविधियों



➤ **रेत टिब्बा स्थिरीकरण के लिए वनीकरण**

- पश्चिमी राजस्थान का 58% अर्ध-स्थिर रेत के टीलों को स्थानांतरित करके कवर किया जाता है।
- डन का अर्थ है, पहाड़ी स्थलाकृतिक सुविधा।
- भारत में राजस्थान की 11.996 मीटर हेक्टेयर भूमि और तटीय क्षेत्रों की 1.47 एमएचए गंभीर हवा कटाव की समस्याओं का सामना कर रहे हैं

➤ **मिट्टी और जल संरक्षण के लिए विभिन्न वनस्पति तरीके**

• **पट्टी रोपण**

इस विधि में, फसलों का विरोध करने वाले कटाव और कटाव को वैकल्पिक रूप से बारिश के पानी के वेग को मंद करने के लिए भूमि की ढलान पर सही कोण पर उठाया जाता है।

• **घूर्णन फसल**

इस विधि में खेत में पेड़ों के साथ या तो अनाज की फसल घास या फलियां लगाई जाती हैं।

• **कवर क्रॉपिंग**

पेड़ और घास पृथ्वी की सतह को कवर करने के लिए उगाए जाते हैं।

**पर्वतीय क्षेत्रों में वनीकरण**

पहाड़ियों को अत्यधिक चराई और लगातार आग से जुड़े अप्रतिबंधित गिरने से बदनाम किया गया है। कुछ क्षेत्रों में घास के बढ़ने के कारण कटाव कम होने से नुकसान हुआ है। लेकिन ज्यादातर मामलों में सतह की मिट्टी क्षीण हो गई है। कई क्षेत्रों में, यहां तक कि उपमृदा गायब हो गई है, जिससे मिट्टी की कोई सामग्री नहीं है। मिट्टी आमतौर पर नमी और पोषक तत्वों में खराब होती है। जब क्षेत्र में मिट्टी मौजूद होती है, तो समोच्च ट्रेचिंग की जा सकती है क्योंकि यह मिट्टी और जल संरक्षण में मदद करती है। जब ढलान खड़ी हो जाती है, तो खाइयों की खुदाई संभव नहीं हो सकती है और ऐसे मामलों में, रोपण के लिए गड्ढों की तैयारी अपनाई जा सकती है।

LEARNIZY